Class X
(CBSE 2019)
Hindi (A)
Delhi (Set-3)

(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं- क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

प्रश्न 1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

आजकल दूरदर्शन पर आने वाले धारावाहिक देखने का प्रचलन बढ़ गया है। बाल्यावस्था में यह शौक हानिकारक है। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक निम्न स्तर के होते हैं। उनमें अश्लीलता, अनास्था, फैशन तथा नैतिक बुराइयाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं। छोटे बालक मानसिक रूप से परिपक्व नहीं होते। इस उम्र में वे जो भी देखते हैं। उसका प्रभाव उनके दिमाग पर अंकित हो जाता है। बुरी आदतों को वे शीघ्र ही अपना लेते हैं। समाजशास्त्रियों के एक वर्ग का मानना है कि समाज में चारों ओर फैली बुराइयों का एक बड़ा कारण दूरदर्शन तथा चलचित्र भी हैं। दूरदर्शन से आत्मसीमितता, जड़ता, पंगुता, अकेलापन आदि दोष बढ़े हैं। बिना समय की पाबंदी के घंटों दूरदर्शन के साथ चिपके रहना बिलकुल गलत है। इससे मानसिक विकास रुक जाता है, नज़र कमजोर हो सकती है और तनाव बढ़ सकता है।

(क) आजकल दूरदर्शन के धारावाहिकों का स्तर कैसा है?

(ख) दूरदर्शन का दुष्प्रभाव किन पर अधिक पड़ता है और क्यों?

(ग) दूरदर्शन के क्या-क्या दुष्प्रभाव हैं?

(घ) 'बाल्यावस्था' शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर

(क) आजकल दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारवाहिक निम्न स्तर के होते हैं। उनमें परिपक्वता का अभाव होता हैं। उनमें अश्लीलता, अनास्था जैसी नैतिक बुराइयाँ होती हैं। इसका बुड़ा प्रभाव दर्शकों पर पड़ता है।
(ख) दूरदर्शन का दुष्प्रभाव सबसे अधिक छोटे बच्चों पर पड़ता है। इसका मुख्य कारण उनकी उम्र का कम होना है। इस उम्र में बच्चे जो देखते हैं, उसका सीधा प्रभाव उनके अपरिपक्व मानस पटल पर पड़ता है। बुड़ी आदतों को वे शीध्र ही अपना लेते हैं।
(ग) आत्मसीमितता, जड़ता, पंगुता, अकेलापन आदि दूरदर्शन के मुख्य दुष्प्रभाव हैं। दूरदर्शन के कारण लोग समय को कम

महत्व देने लगे हैं। घंटों दूरदर्शन के सामने बैठे रहकर अपने समय का व्यर्थ उपयोग करते हैं। बच्चों का सही मानसिक विकास नहीं हो पाता है।

(घ) बाल्यावस्था = बाल्य + अवस्था (अ +अ = आ) स्वर संधि।

(ड.) दूरदर्शन का दुष्प्रभाव अथवा दूरदर्शन समाज के लिए अभिशाप

प्रश्न 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कोलाहल हो

या सन्नाटा कविता सदा सृजन करती है

जब भी आँसू हुआ पराजित,

कविता सदा जंग लड़ती है

जब भी कर्ता हुआ अकर्ता

कविता ने जीना सिखलाया

यात्राएँ जब मौन हो गईं

कविता ने चलना सिखलाया

जब भी तम का जुल्म बढ़ा है,

कविता नया सूर्य गढ़ती है,

जब गीतों की फसलें लुटतीं

शीलहरण होता कलियों का,

शब्दहीन जब हुई चेतना

तब-तब चैन लुटा गलियों का

अपने भी हो गए पराए

यों झूठे अनुबंध हो गए

घर में ही वनवास हो रहा

यों गूंगे संबंध हो गए।

(क) कविता कैसी परिस्थितियों में सृजन करती है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाव समझाइए ‘जब भी तम का जुल्म बढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है।'

(ग) गलियों का चैन कब लुटता है?

(घ) 'परस्पर संबंधों में दूरियाँ बढ़ने लगीं' - यह भाव किस पंक्ति में आया है?

(ङ) कविता जीना कब सिखाती है?

अथवा

जो बीत गई सो बात गई।

जीवन में एक सितारा था,

माना, वह बेहद प्यारा था,

वह डूब गया तो डूब गया।

अंबर के आनन को देखो,

कितने इसके तारे टूटे,

कितने इसके प्यारे छूटे,

जो छूट गए फिर कहाँ मिले;

पर बोलो टूटे तारों पर,

कब अंबर शोक मनाता है?

जो बीत गई सो बात गई।

जीवन में वह था एक कुसुम,

थे उस पर नित्य निछावर तुम,

वह सूख गया तो सूख गया;

मधुबन की छाती को देखो,

सूखी कितनी इसकी कलियाँ,

मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,

जो मुरझाई फिर कहाँ खिलीं,

पर बोलो सूखे फूलों पर,

कब मधुबन शोर मचाता है?

जो बीत गई सो बात गई।

(क) 'जो बीत गई सो बात गई' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) आकाश की ओर कब देखना चाहिए और क्यों?

(ग) 'सूखे फूल' और 'मधुबन' के प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) टूटे तारों का शोक कौन नहीं मनाता है?

(ङ) आपके विचार से 'जीवन में एक सितारा' किसे माना होगा?

उत्तर

(क) कोलाहल हो या सन्नाटा हो किसी भी विकट परिस्थिति में कविता सृजन करती है।

(ख) जब-जब जीवन में अंधकार रूपी निराशाएँ बढ़ती हैं तब-तब कविता सूर्य की भाँति हमारे मन में आशा का संचार करती हैं।

(ग) कलियों के शीलहरण होने से मनुष्य की चेतना आहत होती है तब गलियों का चैन लुट जाता है।

(घ) अपने भी हो गए पराए

यों झूठे अनुबंध हो गए

घर में ही वनवास हो रहा

यों गूंगे संबंध हो गए।

(ड.) जीवन में कुछ भी गलत घटित होने पर या भ्रमित होने पर कविता जीना सिखाती है।

अथवा

(क) जो बीत गई सो बात गई का आशय यह है कि हमें बीते समय के विषय में अधिक नहीं सोचना चाहिए। बीता हुआ समय वापस नहीं आ सकता। ऐसा करने से हमारा कुछ लाभ नहीं होता है। अतः ऐसा करना व्यर्थ है।

(ख) रात्री के समय जब तारें टूटते हैं तब आकाश को देखना चाहिए। इस समय आकाश को देखने से हमें विकट परिस्थितियों में भी अपना धैर्य बनाए रखने की शिक्षा मिलती हैं।

(ग) 'सूखे फूल' बीते समय तथा 'मधुबन' जीवन का प्रतीक है।

(घ) 'अम्बर' टूटे तारों का शोक नहीं मनाता है।

(ड.) एक सितारा जीवन के किसी अत्यंत प्रिय व्यक्ति अथवा सुख को माना गया होगा।

प्रश्न 3

निर्देशानुसार किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए-

(क) मैंने उस व्यक्ति को देखा जो पीड़ा से कराह रहा था। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ख) जो व्यक्ति, परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है। (सरल वाक्य में बदलिए)

(ग) वह कौन-सी पुस्तक है जो आपको बहुत पसंद है। (रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए)

(घ) कश्मीरी गेट के निकल्सन कब्रगाह में उनका ताबूत उतारा गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर

(क) मैंने उस व्यक्ति को देखा और वह पीड़ा से कराह रहा था।

(ख) परिश्रमी व्यक्ति अवश्य सफल होता है।

(ग) संज्ञा उपवाक्य

(घ) कश्मीरी गेट का जो निकल्सन कब्रगाह है, वहाँ उनका ताबूत उतारा गया।

प्रश्न 4

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए-

(क) बालगोबिन भगत प्रभातियाँ गाते थे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ख) बीमारी के कारण वह यहाँ न आ सका। (भाववाच्य में बदलिए)

(ग) माँ के द्वारा बचपन में ही घोषित कर दिया गया था। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

(घ) अवनि चाय बना रही है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ङ) घायल हंस उड़ न पाया। (भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न 5

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए-

(क) दादी जी प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ती हैं।

(ख) रोहन यहाँ नहीं आया था।

(ग) वे मुंबई जा चुके हैं।

(घ) परिश्रमी अंकिता अपना काम समय से पूरा कर लेती है।

(ङ) रवि रोज सवेरे दौड़ता है।

उत्तर

(क) सक्रर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एक वचन

(ख) स्थान वाचक क्रिया विशेषण

(ग) सर्वनाम, कर्ता

(घ) गुण वाचक विशेषण

(ङ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता, एकवचन

प्रश्न 6

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(क) 'करुण रस' का एक उदाहरण दीजिए

(ख) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित रस पहचान कर लिखिए-

तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप,

साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप।

घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,

धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।

(ग) ‘उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?

(घ) 'वात्सल्य' रस का स्थायी भाव क्या है?

(ङ) 'श्रृंगार' रस के कौन से दो भेद हैं?

उत्तर

(क) वह आता--

दो टूक कलेजे को करता, पछताता

पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भर दाने को – भूख मिटाने को

(ख) हास्य रस

(ग) वीर रस

(घ) वत्सल

(ङ) संयोग श्रृंगार

वियोग श्रृंगार

प्रश्न 7

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, "बाबा ! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।" खाँ साहब मुसकराए। लाड़ से भरकर बोले, "धत् ! पगली, ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं तुम लोगों की तरह बनाव-सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब क्या रियाज़ हो पाता?"

(क) एक दिन एक शिष्या ने खाँ साहब को क्या कहा? क्यों ?

(ख) खाँ साहब ने शिष्या को क्या समझाया?

(ग) इससे खाँ साहब के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर

(क) एक दिन एक शिष्या ने खाँ साहब को फटी लुँगिया न पहनने को कहा। खाँ साहब को उनकी अद्वितिय प्रतिभा के कारण भारत रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया है। इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति का फटा कपड़ा पहनना उचित नहीं होता इसलिए शिष्या ने उन्हें फटी लुँगिया पहनने से मना किया।

(ख) खाँ साहब ने अपनी शिष्या को समझाया कि मनुष्य की प्रतिभा महत्वपूर्ण होती है न कि उसका पहनावा या बाहरी रुप।

(ग) इस प्रसंग से खाँ साहब के सादगी पूर्ण तथा दिखावा रहित व्यक्तित्व का पता चलता है। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त सरल तथा निश्छल था।

प्रश्न 8

निम्नलिखित में से किंही चार के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) मन्नू भंडारी के पिता के दकियानूसी मित्र ने उन्हें क्या बताया कि वे भड़क उठे?

(ख) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के आश्चर्य का कारण क्यों थी?

(ग) कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे?

(घ) 'फादर बुल्के की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी लगती थी' - इस मान्यता का कारण समझाइए।

(ड.) 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर समझाइए – "क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है ....।"

उत्तर

(क) मन्नू भंडारी के पिताजी को एक बार उनके मित्र ने मन्नू भंडारी के हड़ताल में भाग लेने तथा भाषण देने के विरुद्ध आकर भड़काया कि अच्छे घर की लड़कियों को यह सब करना शोभा नहीं देता।

(ख) वृद्ध होते हुए भी बालगोबिन भगत की स्फूर्ति में कोई कमी नहीं थी। सर्दी के मौसम में भी, भरे बादलों वाले भादों की आधी रात में भी वे भोर में सबसे पहले उठकर गाँव से दो मील दूर स्थित गंगा स्नान करने जाते थे, खेतों में अकेले ही खेती करते तथा गीत गाते रहते। विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। एक वृद्ध में अपने कार्य के प्रति इतनी सजगता को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ मिली जुली संस्कृति के प्रतीक थे। उनका धर्म मुस्लिम था। मुस्लिम धर्म के प्रति उनकी सच्ची आस्था थी परन्तु वे हिंदु धर्म का भी सम्मान करते थे। मुहर्रम के महीने में आठवी तारीख के दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते थे व दालमंडी मे फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते थे। इसी तरह इनकी श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते थे। तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे और उसी ओर शहनाई बजाते थे। वे अक्सर कहा करते थे कि काशी छोड़कर कहाँ जाए, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मंदिर यहाँ। मरते दम तक न यह शहनाई छूटेगी न काशी।

(घ) देवदार का वृक्ष आकार में लंबा-चौड़ा होता है तथा छायादार भी होता है। फ़ादर बुल्के का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही था। जिस प्रकार देवदार का वृक्ष वृहदाकार होने के कारण लोगों को छाया देकर शीतलता प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार फ़ादर बुल्के भी अपने शरण में आए लोगों को आश्रय देते थे। तथा दु:ख के समय में सांत्वना के वचनों द्वारा उनको शीतलता प्रदान करते थे।

(ड.) देशभक्त नेताओं ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपनी हर खुशी को त्याग दिया तथा अपना सर्वस्व देश के प्रति समर्पित कर दिया। आज हमारा देश उन्हीं के कारण आज़ाद हुआ है। परन्तु यदि किसी के मन में ऐसे देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना नहीं है, वे उनकी देशभक्ति पर हँसते हैं तो यह बड़े ही दु:ख की बात है। ऐसे लोग सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हैं, इनके मन में स्वार्थ की भावना प्रबल है। लेखक ऐसे लोगों पर अपना क्षोभ व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 9

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन -

छाया मत छूना

मन, होगा दुख दूना।

(क) 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कष्णा है' - इस पंक्ति से कवि किस तथ्य से अवगत करवाना चाहता है?

(ख) कवि ने यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

(ग) 'मृगतृष्णा' का प्रतीकात्मक अर्थ लिखिए।

उत्तर

(क) जीवन में सुख तथा दुख दोनों ही मौजूद है। सुख तथा दुख जीवन का सत्य है। दुख के बिना सुख आनंदरहित है। हमें दोनों के लिए तैयार रहना चाहिए।

(ख) यथार्थ पूजन से कवि का आशय यथार्थ को स्वीकार करना है। हमें कठिन यथार्थ को भी झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए।

(ग) 'मृगतृष्णा' छल तथा भ्रम का प्रतीक है।

प्रश्न 10

निम्नलिखित में से किंही चार प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) लक्ष्मण ने धनुष टूटने के किन कारणों की संभावना व्यक्त करते हुए राम को निर्दोष बताया?

(ख) फागुन में ऐसी क्या बात थी कि कवि की आँख हट नहीं रही है?

(ग) फसल क्या है? - इसको लेकर फसल के बारे में कवि ने क्या-क्या संभावनाएँ व्यक्त की हैं?

(घ) 'कन्यादान' कविता में वस्त्र और आभूषणों को 'स्त्री जीवन के बंधन' क्यों कहा गया है?

(ङ.) संगतकार किसे कहा जाता है? उसकी भूमिका क्या होती है?

उत्तर

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

(1) हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।

(2) श्री राम को तो ये धनुष, नए धनुष के समान लगा।

(3) श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वत: टूट गया।

(4) इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था।

(5) उन्होंने ऐसे अनेक धनुषों को बालपन में यूँ ही तोड़ दिए थे। यही सोचकर उनसे यह कार्य हो गया।

(ख) फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कही लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुश्बू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

(ग) कवि के अनुसार फसल ढ़ेर सारी नदियों के पानी का जादू, अनेक लोगों के हाथों के स्पर्श की गरिमा तथा बहुत सारे खेतों की मिट्टी के गुण का मिला जुला परिणाम है। अर्थात् फसल किसी एक की मेहनत का फल नहीं बल्कि इसमें सभी का योगदान सम्मिलित है।

(घ) स्त्री-जीवन में वस्त्र और आभूषण भ्रम मात्र हैं। ये स्त्रियों को भ्रमित कर आगे बढ़ने से रोकते हैं। इस प्रकार के सभी तत्व स्त्री जीवन के लिए बंधन हैं क्योंकि ये उन्हें एक सीमा में बाँधे रखती हैं।

(ड.) संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने सुरों को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है। संगतकार के माध्यम से कवि उस वर्ग की ओर संकेत करना चाहता है जिसके सहयोग के बिना कोई भी व्यक्ति ऊँचाई के शिखर को प्राप्त नहीं कर सकता है।

प्रश्न 11

साना-साना हाथ जोड़ी के आधार पर गंतोक के मार्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए जिसे देखकर लेखिका को अनुभव हुआ – "जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य!"

अथवा

'जार्ज पंचम की नाक' के बहाने भारतीय शासनतंत्र पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए पत्रकारों की भूमिका पर भी टिप्पणी कीजिए।

उत्तर

प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को असीम आत्मीय सुख की अनुभूति होती है। इन सारे दृश्यों में जीवन के सत्य को लेखिका ने अनुभव किया। इस वातावरण में उसको अद्भुत शान्ति प्राप्त हो रही थी। इन अद्भुत व अनूठे नज़ारों ने लेखिका को पल मात्र में ही जीवन की शक्ति का अहसास करा दिया। उसे ऐसा अनुभव होने लगा मानो वह देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बनकर बह रही हो और उसके अंतरमन की सारी तामसिकताएँ और सारी वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह कर नष्ट हो गई हों और वह चीरकाल तक इसी तरह बहते हुए असीम आत्मीय सुख का अनुभव करती रहे।

अथवा

सरकारी तंत्र के आलस्य का वर्णन किया गया है। सरकारी तंत्र तभी होश में आता है जब बात गंभीरता का रूप धारण कर लेती है। वह अपने कर्तव्य को सही ढ़ग से न निभाते हुए मीटिंग के हवाले समस्या को छोड़ देते हैं। अपनी ज़िम्मदारी को भली–भांति नहीं निभाते व ज़िम्मेदारी दूसरे विभाग पर डालते रहते हैं जिससे समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है। सलाह–मशवरा तो उचे पैमाने पर करने की कोशिश करते हैं पर बुद्धि के मामले पर समस्या को सुलझा नहीं पाते। वे अपनी समस्याओं का हल बाहर ढूँढने के स्थान पर जंग लगी फाइलों का सहारा लेते हैं परन्तु इन फाइलों की इतनी बेकदरी होती है कि वो भी बर्बाद हो जाते हैं।

राष्ट्र को सही दिशा में चलाने के लिए पत्रकारों को देश के नागरिकों के हित को ध्यान में रखते हुए खबरों को छापना चाहिए। कल्याणकारी खबरें राष्ट्र को सही दिशा प्रदान करती हैं। जबकि गलत खबरें लोगों को पथ भ्रष्ट कर सकती हैं।

प्रश्न 12

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

(क) कमरतोड़ महँगाई

• महँगाई के कारण

• समाज पर प्रभाव

• व्यावहारिक समाधान

(ख) स्वच्छ भारत अभियान

• विकास में स्वच्छता का योगदान

• अस्वच्छता से हानियाँ

• रोकने के उपाय

(ग) बदलती जीवन शैली

• जीवन शैली का आशय

• बदलाव कैसा

• परिणाम

उत्तर

(क) कमरतोड़ महँगाई

आज के समय में मध्यमवर्ग को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आय के साधन सीमित होने से घर की आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो रही है और उस पर बढ़ती हुई इस महँगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ कर रख दी है। वैसे ही हमारे देश में अनेक समस्याएँ पहले से ही विराजमान है, अब महँगाई होना मध्यम वर्ग के लिए और भी भयानक स्थिति पैदा कर रही है।

ये महँगाई एक रूप में नहीं है। आज खान-पान, वस्त्रों, घरेलू समानों, रेल टिकटों, हवाई जहाज यात्रा, और पेट्रोल व डीजल की कीमतों में दिखाई दे रही है। मध्यमवर्ग वैसे ही बेरोज़गारी व गरीबी की समस्याओं से आहत है। घर बड़ा है परन्तु घर की सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आय कम है, जिसके कारण वह गरीब और गरीब हो रहा है। उसके ऊपर पैट्रोल व डीजल की कीमतों के बढ़ने से उसके कन्धे पर एक बोझ और बढ़ गया है। यात्रा करना भी उसके लिए महँगा पड़ता जा रहा है। घर का किराया बढ़ता जा रहा है। आमदनी में इतनी बढ़ोतरी नहीं होती, जितनी जल्दी अन्य चीज़ों के मूल्यों में बढ़ोतरी हो रही है। जहाँ नज़र डालें महँगाई का आतंक दिखाई देता है। दूध, फल, सब्जियाँ, दालें, घर में प्रयोग होने वाला समान, कपड़े, जूते आदि में निरंतर वृद्धि हो रही है। आमदनी का दायरा सीमित है परन्तु महँगाई का असीमित। इससे लोगों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। लोगों को घर चलाने के लिए अन्य साधनों को तलाशना पड़ता है जिनसे और आमदनी प्राप्त हो सके। इससे उन पर शारीरिक दबाव बन जाता है। अधिक कार्य करने से शरीर पर विपरीत असर पड़ता है। इलाज करवाने जाता है, तो अस्पताल और दवाइयों का खर्चा उसको तंग करता है। महँगाई उसका पीछा नहीं छोड़ती। सरकार को चाहिए कि महँगाई को रोकें। सरकार का कार्य है देश और जनता की भलाई के लिए ऐसे कार्य करे जिससे देश और जनता का विकास हो सके। देश में रहते हुए लोग अच्छा जीवन गुज़ार सकें।

(ख) स्वच्छ भारत अभियान

देश के विकास में स्वच्छता का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यटन के दृष्टिकोण से अक्सर हमारे देश में विदेशी पर्यटक आते रहते हैं। अतः हमें अपने देश की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे विस्व स्तर पर हमारा देश विख्यात होगा। समाज में स्वच्छता बनाए रखना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

स्वच्छता का अपना ही महत्व है। इसे अपनाने से गंदगी दूर होती है। गंदगी के कारण कई बीमारियाँ फैलती है। इनसे बचने के लिए स्वच्छता अनिवार्य है। यदि भारत के सभी नागरिक स्वच्छता की ओर ध्यान देंगे, तो निश्चय ही भारत को स्वस्थ बनाया जा सकता है। देश को स्वच्छ रखना सभी नागरिकों का पहला कर्तव्य होना चाहिए। उन्हें इसके महत्व को समझते हुए अपने आस-पड़ोस को स्वच्छ रखना चाहिए।

कूड़ा आस-पास फैलने से रोक कर हम वातावरण को स्वच्छ रख सकते हैं। कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही रखें।

(ग) बदलती जीवन शैली

जीवन शैली से तात्पर्य मनुष्य के रहन-सहन का तरीका है आज मनुष्य की जीवन शैली में बहुत बदलाव आ रहे हैं। पहले मनुष्य के जीवन स्तर और आज के जीवन स्तर में बहुत अंतर है। पहले मनुष्य सादा जीवन और उच्च विचार अपनाता था। आज कल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन है। यह परिवर्तन रहन-सहन, पहनावे में, भोजन में, भ्रमण करने इत्यादि सभी क्षेत्रों में हो रहा है। इससे मनुष्य मिश्रित संस्कृति की ओर बढ़ रहा है। मनुष्य विलासिता पूर्ण जीवन जीना चाहता है और आलसी होता जा रहा है। मनुष्य का स्वभाव स्वार्थी होता जा रहा है। अपने आप में सीमित होता जा रहा है। बाहरी दुनिया से अपने आप को दूर करता जा रहा है। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हमें समाज में ही रहना है। अत:, मनुष्य को मिलनसार, एक दूसरे के प्रति स्नेह और आदर का भाव रखना होगा तभी हम संस्कारी कहला सकते हैं।

प्रश्न 13

किसी विशेष टी. वी. चैनल द्वारा अंधविश्वासों को प्रोत्साहित करने वाले अवैज्ञानिक और तर्कहीन कार्यक्रम प्रायः दिखाए जाने पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

अथवा

आप अपनी किसी चूक के लिए बहुत लज्जित हैं और माँ के सामने जाने का साहस भी नहीं जुटा पा रहे हैं। तथ्यों को सपष्ट करते हुए माँ को पत्र लिखकर क्षमा याचना कीजिए।

उत्तर

डी-413, सरोजनी नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

सेवा में,

मुख्य सम्पादक,

हिन्दुस्तान टाइम्स,

बहादुरशाह जफ़र मार्ग,

नई दिल्ली।

विषय: टी.वी चैनल द्वारा अंधविश्वासों को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगाने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं भारतीय हूँ और दिल्ली का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान टी. वी चैनलों पर दिखाए चाने वाले आपत्तिजनक कार्यक्रमों पर आकर्षित करवाना चाहता हूँ। कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें अंधविश्वासों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस प्रकार के कार्यक्रमों का प्रभाव विशेषकर बच्चे और घरेलू स्त्रियों पर पड़ता है। कुछ पढ़े लिखे लोग भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। कभी-कभी लोग अपनी समस्या के निवारण के लिए ढ़ोंगी बाबा पर विश्वास कर गलत काम करने को भी तैयार हो जाते हैं। इससे समाज में हिंसा बढ़ सकती है। इस प्रकार की मानसिक्ता के साथ समाज का कल्याण नहीं हो सकता है। अतः आपसे निवेदन है कि इस प्रकार का टी.वी. प्रसारण रोकने हेतु उचित लेख लिख कर समाज को जागरुक करें। सरकार को इस विषय की जानकारी दी जाए। निर्माताओं को भी उनके कर्तव्यों से अवगत करवाया जाए। आशा करता हूँ कि जल्द ही आप इस विषय पर उचित कार्यवाही कर इस समस्या का निवारण करने में सफल होंगे।

धन्यवाद,

भवदीय,

राकेश अग्रवाल

अथवा

ए.सी.-4,

पालिका विहार,

नई दिल्ली

तिथि: ....

पूज्य माताजी,

सादर प्रणाम!

आपके द्वारा भेजा गया पत्र मुझे आज ही प्राप्त हुआ है। घर के विषय में कुशलमंगल जानकर मेरा हृदय प्रसन्नचित हो गया। माँ कुछ दिनों से मुझे आपकी बहुत याद आ रही है। आपसे अपनी मन की बात कहने का मन कर रहा है। आपने मुझे सोहम के साथ कहीं भी जाने को मना किया था। परंतु माँ मुझसे एक अपराध हो गया है। परीक्षा समीप होने के बावजूद मैं उसके साथ फ़िल्म देखने गया था। माँ मुझे अपनी गलती का आभास है। मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं आगे से कभी इस प्रकार की गलती नहीं करूँगा। मुझे यह पता चल गया है कि यदि मैं उसके साथ अधिक रहुँगा तो मेरा मन भी पढ़ाई में नहीं लगेगा। आज से मैं उससे दूर रहुँगा। आशा करता हूँ की आप मेरे इस अपराध को क्षमा कर देंगी।

आपका पुत्र,

अमित

प्रश्न 14

अतिवृष्टि के कारण कुछ शहर बाढ़ ग्रस्त हैं। वहाँ के निवासियों की सहायतार्थ सामग्री एकत्र करने हेतु एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

अथवा

बॉल पेनों की एक कंपनी ‘सफल' नाम से बाज़ार में आई है। उसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर

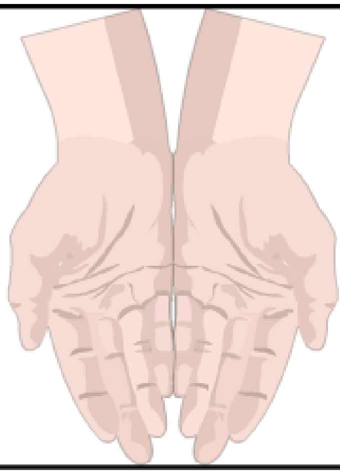

केरल तथा आस–पास के इलाकों में बाढ़ की तबाही से 77 की मौत तथा 25 घायल।

आपका अमुल्य सहयोग सुधार सकता हैं इनका जीवन
बढ़ाएँ अपना कदम
किसी बेसहारा को सहारा देने के लिए

अथवा

सफल बॉल पेन

सफल पेन का इस्तेमाल करें।
अपने बच्चों को जीवन में सफल बनाएँ
एक पेन के साथ एक मुफ्त पाएँ ।
एक पैकट पर 50% की छूट पाएँ ।

सफल बॉल पेन

संपर्क–सफल पेन, ए–85 नेहरू प्लेस

www.safal.pen.com